हक की मुहब्बत, बातिल से नफरत

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

‘नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.’

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

1] मिश्कात की रिवायत, रावी हज़रत इब्राहीम बिन मैसरा (रदी)

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जो शख्स किसी बिदअती की इज़्ज़त करेगा तो उसने इस्लाम को धाने मै मदद की. बिदअती से मुराद वो शख्स है जिस ने इस्लाम के अन्दर कोई ऐसा नज़रिया या अमल दाखिल किया जो इस्लाम से टकराता है या उस्से मेल नहीं खाता, ऐसा शख्स इस्लाम की इमारत को ढाने की कोशिश करता है और जो शख्स उस्का आदर व सम्मान करता है वो शख्स इस्लाम के ढाने मै मददगार बनता है. आपﷺ की चाहत ये है की ऐसे लोग मुसलमानों की सोसाईटी मै इज़्ज़त और सम्मान की निगाह से ना देखे जाए और उन्के काम को बरदाश्त ना किया जाए. ज़रा इस हदीस

पर सोच विचार कीजिये और फिर अपनी सोसाईटी को देखिये की इस लिहाज़ से उस्का क्या हाल है?.

2] मिश्कात की रिवायत

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की मुनाफिक को सरदार मत कहो, इसलिए की अगर ऐसा हुआ तो तुम ने अपने रब को नाराज़ किया. “सरदार ना कहो” का मतलब ये है की ऐसा आदमी जो कहता कुछ हो और करता कुछ और हो, जिस्को इस्लाम की हक्कानियत पर यकीन नहीं है जिस्को इस्लामी शिक्षाओं के बारे मै शक है, ऐसे आदमी को अपना सरदार ना बनाओ अगर ऐसा करोगे तो अल्लाह की नाराज़ी मोल लोगे, और जिस से अल्लाह नाराज़ हो जाए उस्का कहीं ठिकाना नहीं, दुनिया मै भी ज़िल्लत और आखिरत मै भी तबाही.

3] अल अदबुल मुफरद की रिवायत, रावी हज़रत अब्दुल्लाह इबने अमर इबने अल आस रदी.

शराब पीने वाले जब बीमार पडें तो उन्की अयादत को ना जाओ.

4] बैहकी व मिश्कात की रिवायत, रावी हज़रत इबने मसउद रदी.

रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- की जब बनी इसराइल अल्लाह की नाफरमानियों के काम करने लगे तो उन्के विद्वानों ने उन्हें रोका लेकिन वो नहीं रूके तो (उन्के आलिम उन्का बाईकाट करने के बजाये) उन्की मजलिसों मै बैठने लगे और उन्के साथ खाने पीने लगे, जब ऐसा हुआ तो अल्लाह तआला ने उन सब के दिल एक जैसे कर दिये और फिर हज़रत दाउद (अल) और ईसा बिन मरयम (अल) की जुबान से अल्लाह ने उनपर लानत की ये इसलिए की उन्हों ने नाफरमानी (अवज्ञा) की राह अपना ली और इसी मै बढे चले गये. अब्दुल्लाह इबने मसउद (रदी) जो इस हदीस के रावी है फरमाते है की रसूलुल्लाहﷺ टेक लगाये बैठे थे, फिर सीधे बैठ गये और फरमाया- नहीं, उस जात की कसम जिस्के कब्जे मै मेरी जान है तुम ज़रूर लोगों को नेकी का हुक्म देते रहोगे और बुराईयों से रोकते रहोगे और ज़ालिम का हाथ पकडोगे और ज़ालिम को हक पर झुकाओगे. अगर तुम लोग ऐसा नहीं करोगे तो तुम सब के दिल भी एक ही तरह के हो जाएंगे और फिर

अल्लाह तुम्को अपनी रहमत और हिदायत से दूर फेंक देगा, जिस तरह बनी इसराइल के साथ उसने मुआमला किया.

5] बुखारी की रिवायत, रावी हज़रत नुअमान बिन बशीर रदी. रसूलुल्लाहﷺ ने फरमाया- वो शख्स जो अल्लाह के आदेशों को तोडता है और जो अल्लाह के आदेशों को तोडते हुए देखता है मगर उसे टोकता नहीं, उस्के साथ रवादारी बरतता है उन दोनों की मिसाल ऐसी है जैसे की कुछ लोगों ने एक कश्ती ली और कुरआ डाला, उस कश्ती मै बहुत से दर्जे है, उपर नीचे, कुछ आदमी उपरी हिस्से मै बैठे और कुछ निचले हिस्से मै, तो जो लोग निचले हिस्से मै बैठे थे, वो पानी के लिए उपर वालों के पास से गुज़रते ताकि समुद्र से पानी भरें तो उपर वालों को उस्से तकलीफ होती आखिर मै नीचे के लोगों ने कुल्हाडी ली और कश्ती के पेंदे को फाडने लगे, उपर के लोग उन्के पास आए और कहा तुम ये क्या करते हो? उन्हों ने कहा हमें पानी की जरूरत है और समुद्र से पानी उपर ही जा कर भरा जा सकता है, और तुम हमारे आने जाने से तकलीफ महसूस करते हो, तो अब कश्ती के तख्तों को तोड

कर दरिया से पानी हासिल करेंगे. आपﷺ ने ये मिसाल बयान करके फरमाया- अगर उपर वाले नीचे वालों का हाथ पकड लेते और सुराख करने से रोक देते है तो उन्हें भी डूबने मे बचा लेंगे और अपने को भी बचा लेंगे, और अगर उन्हें उन्की हरकत से नहीं रोकते और नज़र अंदाज़ कर जाते है तो उन्हें भी डुबोएगे और खुद भी डूबेंगे.